मध्य प्रदेश में 'रीवाइल्डिंग' पहल

चर्चा में क्यों?

'टाइगर स्टेट' के नाम से प्रसिद्ध मध्य प्रदेश में **मुख्यमंत्री** डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में **'रीवाइल्डिंग'** नामक एक पहल शुरू की गई है।

मुख्य बिंदु:

- **पहल के बारे में:**
  - 'रीवाइल्डिंग' पहल का उद्देश्य प्रमुख प्रजातियों को उनके **प्राकृतिक आवासों में पुनः स्थापित** करना है और इसे भारत में वन्यजीव संरक्षण के लिये एक मॉडल बनाने का लक्ष्य है।
  - इसमें ऐसे **हिंसक (predator) और शिकार प्रजातियों (prey species)** को पुनः स्थापित किया जा रहा है, जो **पारिस्थितिकी तंत्र** के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन वर्तमान में वनों में अनुपस्थित हैं।
  - इनकी अनुपस्थिति में खाद्य **शृंखला** टूट जाती है और प्राकृतिक जीवनचक्र क्षतिग्रस्त हो जाता है, जिससे पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ जाता है।
- **उद्देश्य** :
  - वन्यजीव पारिस्थितिकी में **संतुलन बहाल करना**।
  - **विलुप्त एवं संकटग्रस्त प्रजातियों** को पुनर्जीवित करना।
  - **जैवविविधता** को बढ़ावा देना।
- **कार्यान्वयन** :
  - वन विभाग ने **दलदली हरिण** और अन्य प्रजातियों को पुनः लाने के लिये एक चरणबद्ध पुनर्वनीकरण योजना बनाई है, जिसमें **घास के मैदानों, नदी के दृश्यों और सहायक आवासों** सहित पूरे वन पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
  - इस मिशन को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA), **वन अनुसंधान संस्थान** और **अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों** का समर्थन प्राप्त है।
  - **जनजातीय और ग्रामीण समुदायों** को भी इसमें शामिल किया जा रहा है, ताकि **वन्यजीव संरक्षण** के साथ-साथ **पारिस्थितिकी पर्यटन** और **आजीविका के अवसर** भी सृजित हो सकें।
- **महत्त्व:**
  - रीवाइल्डिंग **जलवायु परिवर्तन** से निपटने में **महत्त्वपूर्ण** भूमिका निभाता है, क्योंकि यह **कार्बन भंडारण** को बढ़ाता है, **कार्बन उत्सर्जन** को कम करता है और **जल तथा मृदा** जैसे **महत्त्वपूर्ण** संसाधनों का संरक्षण करता है, जिससे प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा होती है।
  - पारिस्थितिकी लाभों के अलावा, रीवाइल्डिंग **वन्यजीव पर्यटन को बढ़ावा देता है**, स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करता है और प्राकृतिक चक्रों को मानव हस्तक्षेप से अप्रभावित बनाए रखता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mp-launches-rewilding-initiative